तर्ज-अगर पंजे वाले की

अर्श किया तुमने दिल को हमारे,
कैसे कहें पिया हमसे जुदा हैं
बैठक लगाई रूहों के दिल में,
ये महबूब मेरे हमपे फिदा हैं

1- खिलवत खाने में इश्क रब्द की,
बातें हुईं थी जो सब याद कराईं
अर्श खज़ाना सब ले आए,
मेहरों के सागर बड़े मेहरबान हैं

2- भरके सुराही इश्के हकीकी,
लेके पधारें हैं मस्ती लुटाने
खड़े क्यूं हो दिलबर बैठो,
बिठाओ आगोश में,हम बड़े गमज़दा हैं

3- इतनी पिला दो कि मैं मैं रहूं न,
तुम ही हो सामने,तुम ही हो जाऊं
एक सरूप हो जायें इश्क में,
रंग मारफ़त का चढ़ता जहां है

Nijanand App